पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जनवरी, 2017

कां.आ. 185(अ)—भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का. आ. 2541(अ), तारीख 2 नवम्बर, 2015, उन सभी व्यक्तियों से, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना थी, उस तारीख से, जिसको उस राज्यपत्र की प्रतियाँ, जिसमें यह अधिसूचना अंतर्विष्ट है, उपलब्ध कर दी गई थी, साठ दिन की अवधि के भीतर आक्रेष और सुझाव आमंत्रित करते हुए एक प्रारूप अधिसूचना प्रकाशित की गई थी।

और, केंद्रीय सरकार उक्र प्रारूप अधिसूचना के उत्तर में सभी व्यक्तियों और पणजारियों में प्रामाण्यों और सुझावों पर द्वारा सम्पूर्ण रूप विचार किया गया;

और, चड़ौगढ़ संघ राज्यसभा के सुखना वन्यजीव अभयारण्य की सीमा दो अन्य राज्यों अवाक्त पंजाब और हिमाचल के माथ मिली हुई है और सुखना वन्यजीव अभयारण्य विभाजित पहाड़ियों के अंतर्गत आती है जो पारिस्थितिक रूप से संचेदनशील और भू-वैज्ञानिक रूप से अवधारी है और इसलिए व्यस्त के दौरान मिली के कटाव के लिए उच्च रूप से प्रवर्तन है। सुखना वन्यजीव अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल 25.9849 वर्ग किलोमीटर (6420.99 एकड़) है;

और, इसके पारिस्थितिक, प्राणिजातीय, वनस्पतीय, आकृतिविज्ञानी, प्राकृतिक और भू-वैज्ञानिक महत्व के कारण इस क्षेत्र को चड़ौगढ़ प्रशासन अधिसूचना सं. 694-एजेज्ज़ैलई(4)-98/4519 तारीख 6 मार्च, 1998 द्वारा वन्यजीव और इसके पर्यावरण के संरक्षण, प्रजनन और विकास के योजना के लिए वन्यजीव अभयारण्य के रूप में घोषित किया गया था।

और, भारत के वन्यजीव संस्थान के निर्देशन में, वन्यजीव अभयारण्य जनगणना, 2010 के दौरान, अनुमति I और II की दो प्रजाति और अनुमति III की चीन प्रजाति और अनुमति IV की बहुत सी प्रजाति को सुखना वन्यजीव अभयारण्य में रिपोर्ट किया गया था। उनमें प्रमुख प्रजातियों जो कि सुखना वन्यजीव अभयारण्य में प्रजाति हैं- तेंदुआ (पेंथिया स्प्रा), साँभर (रुस स्प्रा), भारतीय साल (सालिस स्प्रा), गोल्डन सिय़ार (कैरिएस स्प्रा), प्रे लंगूर (सेम्प्लोनेचेकस स्प्रा), जंगली सूअर (सूस स्प्रा), वाल जंगली मूग (गालस स्प्रा), भारतीय मॉर (प्राइमो स्प्रा), चील (एक्सिस स्प्रा), गोल्डन ओरिजिङल (एक्सिस स्प्रा), कोबरा
(अंगित्योगयत् स्थः), रमेश बाईप (वर्चस्व नामः), भारतीय अजमर (पाण्डुवर स्थः), इत्यादि तथा इनके अतिरिक्त विविध प्रकार की विविधताओं (70 से अधिक प्रजाति) और अन्य कीड़े भी बहुत मात्रा में पाये जाते हैं;

और, सुखना बन्यूवी अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्रों जोकि तथा सीमाएं इस अधिमुखना के पैरा 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पर्यवेक्षण की दृष्टि से पारस्परिक संबंधी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक परामितिक संबंधी जोन में उद्घोषित या उद्घोषित के क्षेत्रों के प्रशासन तथा प्रस्तावरण करने को प्रतिपद्ध करना आवश्यक है;

अतः, अभ, केंद्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पंजट पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (1), उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) और उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त अभिधिन का प्रयोग करते हुए, चंडीगढ़, संघ राज्यक्षेत्र में 1050 हेक्टेयर सुखना बन्यूवी अभयारण्य की सीमा से 2.0 किलोमीटर तथा 2.75 किलोमीटर तक के विस्तारित क्षेत्र को सुखना बन्यूवी अभयारण्य पारस्परिक संबंधी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारस्परिक संबंधी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात्:—

1. पारस्परिक संबंधी जोन का विस्तार और उसकी सीमाएँ,—(1) पारस्परिक संबंधी जोन, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र में सुखना बन्यूवी अभयारण्य की सीमा से 2.0 किलोमीटर से 2.75 किलोमीटर के क्षेत्र तक विस्तारित है; संघ राज्यक्षेत्र चंडीगढ़ प्रशासन ने पारस्परिक संबंधी जोन को दो जोनों में विभाजित किया है अर्थात् जोन-1 और जोन-II और सुखना बन्यूवी अभयारण्य की सीमा में जोन-1 का विस्तार 0.5 किलोमीटर तक है और संतुलन क्षेत्र जोन-II में रखा जाएगा और यह बन्यूवी निवास स्थान के संरक्षण के लिए जोन-I में सभी मानन्दों के उद्देश्य से किया गया है; पारस्परिक संबंधी जोन का क्षेत्र 1050.0 हेक्टेयर (चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र के भाग पर) है।

(2) पारस्परिक संबंधी जोन की सीमा का मानचित्र, इसके अर्थांश और देशान्तर के साथ उपबंध इ के रूप में उपबंध है।

(3) पारस्परिक संबंधी जोन और सुखना बन्यूवी अभयारण्य के निर्देशांक की सीमा का विवरण उपबंध II और उपबंध III के रूप में उपबंध है।

(4) पारस्परिक संबंधी जोन के निर्देशांक इसके अर्थांश और देशान्तर के साथ उपबंध III के रूप में उपबंध है।

(5) पारस्परिक संबंधी जोन के अंतर्गत आने वाले तीन ग्राम, अर्थात् बुद्धा, अलीशेर, किशनगढ और कायबनजा है।

2. पारस्परिक संबंधी जोन के लिए आंचलिक महायोजना,—(1) चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र पारस्परिक संबंधी जोन के प्रयोजन के लिए राजपत्र में इस अधिमुखना के अंतिम प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परमार्थन से और इस अधिमुखना में संलग्न अनुवंशों के माजहेड़ से, एक आंचलिक महायोजना तैयार करेगा।

(2) आंचलिक महायोजना संघ राज्यक्षेत्र की सरकार में सदस्य प्रधानमंत्री द्वारा अनुमोदित होगी।

(3) पारस्परिक संबंधी जोन के लिए आंचलिक महायोजना, संघ राज्यक्षेत्र सरकार द्वारा इस अधिमुखना में विनिर्दिष्ट रूप में ऐसी रीति में तथा सुनिश्चित केंद्रीय और संघ राज्यक्षेत्र की विविधताओं के सामाजिक में भी तथा केंद्रीय सरकार द्वारा जारी मामलेंगों, यदि कोई हो, द्वारा तैयार होगी।

(4) आंचलिक महायोजना, इसमें पर्यावरणीय और पारस्परिक विचारों को समाकलित करने के लिए नियमनिर्दिष्ट सभी संबंध संघ राज्यक्षेत्र की सरकार के विभागों के परमार्थ से तैयार होगी, अर्थात्:—

(i) पर्यावरण;
(ii) वन;
(iii) नगर विकास;
(iv) पर्यटन;
(v) नगरपालिका।
(vi) राजस्व;

(vii) कृषि;

(viii) चारीगाड़ प्रदूषण नियंत्रण समिति;

(ix) सिंचाई; और

(x) लोक निर्माण विभाग।

(5) आंचलिक महायोजना अनुसारित विध्यमान भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई निर्बन्ध अधिगत नहीं करेगी जब तक कि इस अवधीमान में और आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचना और अधिक प्रभावी और पारिस्थितिक अनुकूल क्रियाकलाप कारक इस प्रकार विनिर्दित न हों।

(6) आंचलिक महायोजना में अनावश्यित क्षेत्रों के जीवांशाला, विध्यमान जल निकायों के संरक्षण, आवाह क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संरचनाओं के प्रबंधन, वृद्धि जल के प्रबंधन, मूर्ति और नमी संरक्षण, स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिक और पर्यावरण से संबंधित ऐसे अन्य पहलुओं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, के लिए उपबंध होंगे।

(7) आंचलिक महायोजना सभी विध्यमान पृथ्वी स्थानों, ग्रामों और नगरियाँ बंदोबस्तों, बनाए रखने के प्रकार और फ़िल्टरों, कृषि क्षेत्रों, उपजाऊ भूमि, हरित क्षेत्र जैसे उद्यान और उसी प्रकार के स्थान, उद्यान कृषि क्षेत्र, आर्किडों, शीलों और अन्य जल निकायों का अनुचकन करेगी।

(8) आंचलिक महायोजना पारिस्थितिक संबंधी जोन में विकास के पारिस्थितिक अनुकूल विकास और स्थानीय समुदायों की आवश्यकता को सुनिश्चित करने हेतु विनिर्दित होगी।

3. संस्थान राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा किये जाने वाले उपाय——संस्थान राज्यक्षेत्र की सरकार इस अवधीमान के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए निर्माणिक उपयोग करेगी, अथात् :-

(1) भू-उपयोग——पारिस्थितिक धन्यसंबंधी जोन में बनाए रखने के लिए बनाए रखी गई पाक्रमण और खुले स्थानों वाली संस्थानों का वाणिज्यिक और जैविक संरचना विकास क्रियाकलापों के लिए उपयोग योग्य संयोजित नहीं होगा:

परंतु पारिस्थितिक संबंधी जोन के बीतर कृषि भूमि का संपर्कवर्तन, पैरा 5 के अधीन मानेंटी समिति की निर्देशित पर और संस्थान राज्यक्षेत्र की सरकार के पूर्वैन अनुमोदन से, स्थानीय निवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए और पैरा 4 की मानकों के स्तर (2) के अधीन क्रम मं. 21, 23, 29 और 34 के सामने सूचीबद्ध क्रियाकलापों को पूरा करने के लिए अनुजीत होंगे, अथात् :-

(i) पारिस्थितिक अनुकूल पर्यावरण क्रियाकलापों के लिए पर्यावरण के अस्वभाव आवास के लिए पारिस्थितिक अनुकूल आराममाहौल जैसे टेंट, लकड़ी के मकान आदि;
(ii) प्रदूषण कारित न करने वाले लघु उद्योग;

(iii) वर्षा जल संख्यान; और

(iv) कुड़ीर उद्योग, जिसके अंतर्गत ग्रामीण शिल्पी भी हैं:

परंतु यह और कि राज्य सरकार के पूर्व अनुमोदन और संविधान के अनुसार 244 या तत्सम्बन्ध विषय विधि के उपबंधों के अनुसार के बिना, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परिवर्तन वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी है, वाणिज्यिक या उद्योग विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का उपयोग अनुमोदन नहीं होगा:

परंतु यह और भी कि पारिस्थितिक संवेदी जोन के भीतर भू-अभिलेखों में पाई जाने वाली कोई तुटक मानीयती समिति के विचार ग्रस्त करने के पश्चात राज्य सरकार द्वारा प्रत्यक्ष मामले में एक बार संशोधित होगी और उक्त तुटक के संशोधन की केंद्रीय सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को सूचना देनी होगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त तुटक के संशोधन में इस उप पैरा के अधीन यथा उपबंधित के सिवाय किसी भी दृष्टि में भू-उपयोग का परिवर्तन सम्मिलित नहीं होगा:

परंतु यह भी कि हरित क्षेत्र जैसे वन क्षेत्र, कृषि क्षेत्र आदि में कोई पारिस्थितिक कटौती नहीं होगी और अनुपुक्त या अनुपादक कृषि क्षेत्रों में पुन: वार्षिक करने के बिना किए जाएगे।

(2) प्राकृतिक जल-स्रोत— आंचलिक महायोजना में सभी प्राकृतिक खंडों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण और पुनर्वीकरण के लिए योजना सम्मिलित होगी और राज्य सरकार द्वारा ऐसे क्षेत्रों पर या उनके निकट ऐसे विकास क्रियाकलापों को जो ऐसे क्षेत्रों के लिए ज्यादातर हों, प्रतिपालित करने के लिए मान्यविदेश तैयार किए जाएंगे।

(3) पर्यटन—(क) पारिस्थितिक संवेदी जोन के भीतर पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप, पर्यटन महायोजना के अनुसार होंगे, जो आंचलिक महायोजना का भाग रूप होगा।

(ख) पर्यटन महायोजना पर्यटन विभाग, संच राज्यक्षेत्र, चंडीगढ़ सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा राजस्थान और वन विभाग, संच राज्यक्षेत्र चंडीगढ़ सरकार के राजस्थान से तैयार होगी।

(ग) पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नलिखित के अधीन नियमित होंगे, अर्थात्:-

(i) पारिस्थितिक संवेदी जोन के भीतर सभी नए पर्यटन क्रियाकलापों या विकास पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार राष्ट्रीय व्यापक संरचना प्राधिकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी (समय-समय पर यथा संशोधित) मार्गदर्शनों के अनुसार होगा जिसमें पारिस्थितिक पर्यटन, पारिस्थितिक शिक्षा और पारिस्थितिक क्रियाओं के महत्व दिया जाएगा और पारिस्थितिक संवेदी जोन की वहन ध्वस्त के कारण पर आधारित होगा;

(ii) पारिस्थितिक संवेदी जोन के भीतर होटल और रिसोर्ट के नए संबंधी अनुमोदन अनुमोदन नहीं होंगे।
(iii) अंतर्जल संसाधन का आनुमोदन किए जाने तक, यह वर्तमान और अनुमोदन लिखित विवरण के द्वारा बाहरी को स्वीकार किया जाएगा।

(4) नैसागिक विरासत—(पारिस्थितिक संबंधी जोन में महत्वपूर्ण नैसागिक विरासत के सभी स्थानों जैसे सभी जीव आरोपित क्षेत्र, शेखर विसर्जन, जल प्रपात, नदियाँ, घाटी अलग, उपवन, गुफाएं, मधुमत, ध्रुव, अवक्षेत्र, प्रांतीय आदि की पहचान की जाएगी और उन्हें पररिक्षित किया जाएगा तथा उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए इस अधिनियम के प्रकाशन की तारीख से छह मास के भीतर, उपयुक्त योजना बनाई जाएगी और ऐसी योजना अंतर्जलिय अधियोजन का होगी।

(5) मानव निर्मित विरासत स्थल—(पारिस्थितिक संबंधी जोन में भवन, संरचनाओं, शिल्प-निर्म, ऐतिहासिक, कलात्मक और मानसिक महत्व के क्षेत्रों और अहातों की पहचान की जाएगी और इस अधिनियम के प्रकाशन की तारीख से छह मास के भीतर उनके संरक्षण की योजनाएं तैयार किए जाएंगी तथा अंतर्जलिय महायोजन में सम्मिलित की जाएंगी।

(6) ध्वनि प्रदूषण—(चंडीगढ़ संघ राज्य शेखर, पार्कवर्तन (संरक्षण) अधिनियम 1986 के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में निर्धारित उपबंध के अनुसरण में पारिस्थितिक संबंधी जोन में ध्वनि प्रदूषण के नियंत्रण के लिए विनियमों को कार्यान्वित किया जाएगा।

(7) वायु प्रदूषण—(पारिस्थितिक संबंधी जोन में, वायु प्रदूषण के नियंत्रण के लिए चंडीगढ़ संघ राज्य शेखर प्रदूषण नियंत्रण समिति वायु (प्रदूषण नियंत्रण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंध के अनुसार मार्गदर्शन सीमांत और विनियम पूर्वक किया जाएगा।

(8) बहिसाध्य का निसारण—(पारिस्थितिक संबंधी जोन में उपचारित बहिसाध्य का निसारण सामान्य मानकों के लिए पर्यावरणीय अधिकारिक आच्छादित के निमित्त पर्यावरणीय पारंपरिक (संरक्षण) अधिनियम, 1986 और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंध के अनुसार होगा।

(9) टोस अपशिष्ट—(टोस अपशिष्टों का निपटान निर्देशित रूप में होगा -

(i) पारिस्थितिक संबंधी जोन में टोस अपशिष्टों का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समान-समान पर जनसंगठित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), तारीख 8 अप्रैल, 2016 नगरपालिका टोस अपशिष्ट प्रबंध नियम, 2016 के उपबंध के अनुसार किया जाएगा;

(ii) स्थानीय प्रशासक जैव निःशीलकरणीय और अजैव निःशीलकरणीय संचालनों में टोस अपशिष्टों के संग्रहण के लिए योजनाएं तैयार करएं;

(iii) जैव निःशीलकरणीय सामग्री को अधिमानतः खाद बनाकर या कृमि खेती के माध्यम से पुनःअधिकृत किया जाएगा;

(iv) अकार्बनिक सामग्री का निपटान पारिस्थितिक संबंधी जोन के बाहर पहचान किए गए स्वाभाविक पर्यावरणीय स्वच्छता रीति में होगा और पारिस्थितिक संबंधी जोन में टोस अपशिष्टों को जलता या अभ्यंतरकरण अनुसार नहीं होगा।
(10) जैव विविधता अधिकार,—पारिस्थिक तंत्र के रूप में जैव विविधता अधिकारों का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर व्यापार अधिनियम सं.का.नि.343 (अ) तारीख 28 मार्च 2016 द्वारा प्रकाशित जैव विविधता अधिकार प्रबंध नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया गया है।

(11) यानीय परिवहन.—परिवहन की यानीय गतिविधियों आवास के अनुसार विनियमित होंगी और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विविध उपबंध अधिकरित किए जाएंगे और आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के समय प्राधिकार के द्वारा अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति विवृत नियमों और विनियमों के अनुसार यानीय गतिविधियों के अनुपालन को मानीटर करेगी।

4. पारिस्थिक तंत्र के रूप में प्रतिष्ठा और विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची,—पारिस्थिक तंत्र के रूप में सभी क्रियाकलाप पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के उपबंधों द्वारा आवश्यक होगे और नीचे दी गई तालिका में विविध रीति में विनियमित होंगे, अर्थात्—

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम सं.</th>
<th>क्रियाकलाप</th>
<th>तालिका-टिप्पणी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>(1)</td>
<td>वाणिज्यिक खनन, पत्थर की खदान और उनको तोड़ने की इकाइयाँ।</td>
<td>प्रतिष्ठा क्रियाकलाप</td>
</tr>
<tr>
<td>(2)</td>
<td>आरा मिलों की स्थापना।</td>
<td>पारिस्थिक तंत्र के रूप में भीतर नई और विविध क्रियाकलापों का वितर अनुमस्त नहीं होगा।</td>
</tr>
<tr>
<td>(3)</td>
<td>जल या बाणु या मृदा या धर्मन दुःशन करने वाले उद्योगों की स्थापना।</td>
<td>पारिस्थिक तंत्र के रूप में भीतर किसी नए और विद्यमान क्रियाकलाप का वितर अनुमस्त नहीं होगा।</td>
</tr>
<tr>
<td>(4)</td>
<td>किसी वैदिक स्मारक स्थलों का उपयोग या उपादन।</td>
<td>लागू विधियों के अनुसार प्रतिष्ठा (अन्य उपबंधित के साथ)।</td>
</tr>
<tr>
<td>(5)</td>
<td>जलवायु उपकरण का वाणिज्यिक उपयोग।</td>
<td>लागू विधियों के अनुसार प्रतिष्ठा (अन्य उपबंधित के साथ)।</td>
</tr>
<tr>
<td>(6)</td>
<td>प्राकृतिक जल निकायों या सतही क्षेत्र में अनुपस्थित विभाग और धीरी अपिश्रों का निपटान।</td>
<td>लागू विधियों के अनुसार प्रतिष्ठा (अन्य उपबंधित के साथ)।</td>
</tr>
<tr>
<td>(7)</td>
<td>भू-जल संचय सहित वाणिज्यिक जल योजन।</td>
<td>पारिस्थिक तंत्र के रूप में भू-जल सहित प्राकृतिक जल योजनों के वाणिज्यिक उपयोग का प्रतिष्ठा किया जाएगा।</td>
</tr>
<tr>
<td>(8)</td>
<td>प्रमुख धर्मन और हाइड्रो विभुति परियोजनाओं की स्थापना।</td>
<td>लागू विधियों के अनुसार प्रतिनिधिद्वारा (अन्यथा उपबंधित के अनुसार)।</td>
</tr>
<tr>
<td>(9)</td>
<td>नए काठ आधारित उद्योग।</td>
<td>पारिस्थितिक संबंधी जोन के भीतर नए काठ आधारित उद्योग की स्थापना अनुसार नहीं होगी: परंतु विविध क्षेत्रों के भीतर उद्योग विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद नहीं होगी। परंतु यह और कि विविध क्षेत्रों को अनुसार का नवनिर्माण उनकी परियोजना प्रवृत्ति पर नहीं जा सकती।</td>
</tr>
<tr>
<td>(10)</td>
<td>कॉपरेट फर्मों और कंपनियों द्वारा बंदे पैमाने पर वाणिज्यिक परियोजना और पोलिटी फर्मों की स्थापना।</td>
<td>लागू विधियों के अनुसार प्रतिनिधिद्वारा (अन्यथा उपबंधित के अनुसार)। हालांकि, वाणिज्यिक क्षेत्रों के द्वारा एक छोटे पैमाने पर पहल की अनुमति दी है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**विभिन्नतम क्षितिजकाल**

| (11) | होटलों और रिसोटों की वाणिज्यिक स्थापना। | पारिस्थितिक अनुकूल पर्यटन क्षितिजकाल से संबंधित परियोजनाओं के अन्यथा अमृतमूल्य के लिए वास सुविधाओं के सिविल संस्कृति के प्रारूप की सीमा तक अनुसार के लिए वाणिज्यिक विकल्प या परिस्थितिक संबंधी जोन की सीमा तक इतमें जो भी निकट हो, नये वाणिज्यिक होटल और रिसोट अनुसार नहीं होगा। पर्यटक वनजीव अभयारण्य की सीमा से एक किलोमीटर से परे और पारिस्थितिक संबंधी जोन के भीतर तक सभी अन्य पर्यटन क्षेत्रों या विविध क्षेत्रों का व्यवसाय पर्यटन महायोजना के अनुसार होगा। वाणिज्यिक पारिस्थितिक पर्यटन के साथ “वनजीव निवास में गैर वाणिज्यिक क्षितिजकालों के लिए रिश्ता-निर्देश” के अनुसार जारी एफ. सं. 610/2011 वनजीव दिनांक 15-03.2011 द्वारा पर्यावरण और वन योजना (वनजीव प्रबंध), नई दिल्ली और राष्ट्रीय वाश संरक्षण प्राधिकरण के रिश्ता निर्देशों (पयार लागू हो) के साथ संपादित जा सकता है। |

| (12) | संस्थापित क्षितिजकाल। | संज्ञायित क्षेत्र की सीमा या पारिस्थितिक संबंधी जोन की सीमा तक जो भी निकट हो, से 0.5 किलोमीटर (जोन-1) के भीतर किसी भी प्रकार के नये वाणिज्यिक संस्थापन के अनुसार होगे। परंतु वनजीव अभयारण्य की सीमा से एक किलोमीटर से परे और पारिस्थितिक संबंधी जोन के भीतर के अन्य क्षेत्र तक सभी अन्य पर्यटन क्षेत्रों का व्यवसाय पर्यटन महायोजना के अनुसार होगा। वाणिज्यिक पारिस्थितिक पर्यटन के साथ “वनजीव निवास में गैर वाणिज्यिक क्षितिजकालों के लिए रिश्ता-निर्देश” के अनुसार जारी एफ. सं. 610/2011 वनजीव दिनांक 15-03.2011 द्वारा पर्यावरण और वन योजना (वनजीव प्रबंध), नई दिल्ली और राष्ट्रीय वाश संरक्षण प्राधिकरण के रिश्ता निर्देशों (पद्धति लागू हो) के साथ संपादित किया जा सकता है। |

(क) सभी प्रकार के नए भवनों और परियोजनाओं का संस्थापित जोन-1 में 0.5 किलोमीटर की दूरी पर प्रतिनिधिद्वारा संस्थापित होगा; सुनिया वनजीव अभयारण्य की सीमा से 0.5 किलोमीटर से 1.25 किलोमीटर तक, कम तनबन के संस्थापित (मूल्य के आधे से कम भाग को आत्मसुविधा किया जा सकता है) और कम ऊँचाई वाले भवन (15 फुट ऊँचाई तक) अनुसार करेगा; यदि जोन-1 में भवन के पुनर्निर्माण/रममत उपयुक्त के अधीन रहते हैं, आत्मसुविधा किया जा सकता है। संस्थापित संबंधी जोन के जोन-1 में आयोजित को संस्थापित अनुज्ञात नहीं होगा, तथापि, जोन-1 में भवन के पुनर्निर्माण/रममत उपयुक्त के अधीन रहते हुए, आत्मसुविधा किया जा सकता है। संस्थापित संबंधी जोन के जोन-1 में आयोजित को संस्थापित अनुज्ञात नहीं होगा, तथापि, जोन-1 में भवन के पुनर्निर्माण/रममत उपयुक्त के अधीन रहते हुए, आत्मसुविधा किया जा सकता है। और कम ऊँचाई वाले भवन (15 फुट ऊँचाई तक) होगा। |
(ख) लागू नियम और विनियम, यदि कोई हो, के अनुसार संक्रमण प्राधिकारी की पूर्व अनुमति में, प्रदूषण न कारित करने वाले लघु उद्योग से संबंधित संक्रमण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और न्यूनतम पर रखे जाएंगे।

(ग) इसके अतिरिक्त, आंचलिक महायोजना के अनुसार संक्रमण और नागरिक सुविधाओं की वृद्धि विनियमित होगी।

(13) विहृत केबलों और दूरसंचार टावरों का परिनिर्माण।

(14) कृृषि की कटाई।

(15) विद्युत सड़कों को चौड़ा करना और उन्हें सुधार करना तथा नई सड़कों का संरचना।

(16) उधू टेन्यून पारेरण घाटों का परिनिर्माण।

(17) विदेशी प्रजातियों को लाना।

(18) होटलों और लॉज के विद्युत सड़कों में बाड़ लगाना।

(19) वायु (जिसके अंतर्गत धर्म प्रदूषण भी है) और यांत्रिक प्रदूषण।

(20) वाणिज्यिक साइनबोर्ड और होलिंग।

(21) परिस्थितिक अनूठे पर्यटक क्रियाकलापों के लिए, पर्यटकों के अन्य आवास के लिए परिस्थितिक अनूठे कुठियों, जैसे तंबू, लकड़ी के हो आदि।

(22) प्राकृतिक जल निकायों या सतरंग के क्षेत्र में उपयोगिता बहिराक का निर्माण।

(23) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग।

(24) पर्यटन से संबंधित क्रियाकलाप जैसे मध्य प्राचीन खगोल, अर्थव्यवस्था, कृषि और राजनीतिक सामाजिक क्षेत्रों के ऊपर से उड़ान और अन्य पर्यटन क्रियाकलाप।

(25) टीआर अनुशिष्ठ प्रवेश।
(26) प्यासिक के खेलों का उपयोग।
लागू विधियों (अन्यथा उपबंधित के मित्र) के अधीन नियमित होंगे।

(27) पारिस्थितिक-पर्यटन क्रिया-
कलाप।
लागू विधियों के अधीन नियमित होंगे।

**संबंधित क्रियाकलाप**

(28) स्थानीय समुदायों द्वारा चल रही कृषि और बागवानी प्रशासन के साथ पशुपालन, पशुपालन कृषि, जल कृषि और मछली पालन।
लागू विधियों के अधीन अनुसार होंगे।

(29) वस्त्र जल संचयन।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(30) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत का उपयोग।
लागू विधियों के अधीन अनुसार होंगे।

(31) सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी को ग्रहण करना।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(32) जैविक खेती।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(33) वातावरणीय बाढ़।
लागू विधियों के अधीन अनुसार होंगे।

(34) कुटीर उद्योगों जिसके अंतर्गत ग्रामीण कार्य की आदिवी हैं।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(35) कृषि वातावरण।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(36) पाराफार्मी जागरूकता।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

(37) कौशल विकास।
सक्रिय रूप से बढावा दिया जाएगा।

5. **पारिस्थितिक संबंधी जोन मानीटरी समिति**

(1) केंद्रीय सरकार, पारिस्थितिक संबंधी जोन के प्रभावी मानीटरी के लिए एक मानीटरी समिति का गठन करेगी जो निरालिखित से मिलकर वर्तनी, अर्थात् एक

(i) मुख्य वन संरक्षक/सह मुख्य वन्यजीव वार्ता, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र की सरकार-अध्यक्ष;

(ii) मुख्य वामनकार, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र-सदस्य;

(iii) मुख्य इंजीनियर, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र-सदस्य;

(iv) मुख्य इंजीनियर, नगर निगम, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र-सदस्य;

(v) निदेशक, ग्रामीण विकास और पंचायत, संघ राज्यक्षेत्र, चंडीगढ़-सदस्य;

(vi) सदस्य-चौधर, चंडीगढ़ प्रदूषण नियंत्रण समिति-सदस्य;

(vii) पारा वारण के क्षेत्र में कार्य करने वाले गैर सरकारी संगठनों से चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा तीन वर्ष के लिये नामितित प्रतिनिधि-सदस्य

(viii) पारिस्थितिक और पारा वारण के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ जिसे चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा नामितितित प्रतिनिधि किया जाएगा- सदस्य;
6. निर्देश निबंधन

(1) मानीटरी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा।

(2) पारिस्थितिक संबंधी जीन समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन को मानीटर करेगी।

(3) पारिस्थितिक संबंधी जीन में भारत सरकार के तकालीन पट्टवरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में के अधीन सम्मिलित क्रियाकलापों और इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन प्रतिपल्ला प्रतिनिधियों के सिवाय इसे क्रियाकलापों की दृष्टि में वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं पर आधारित मानीटरी समिति द्वारा संबंधीय जीवनी और उन अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्ण पट्टवरण निर्माण के लिए केंद्रीय सरकार के पट्टवरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट की जाएगी।

(4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन यथा विनिर्दिष्ट प्रतिपल्ला क्रियाकलापों के सिवाय, भारत सरकार के तकालीन पट्टवरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्यांक का.आ. 1533(अ) तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना के अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु पारिस्थितिक संबंधी जीन में आते हैं, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं पर आधारित मानीटरी समिति द्वारा संबंधीय जीवनी और उन संबंध विनिर्दिष्ट प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) मानीटरी समिति का सदस्य-सचिव या संबंध उपयुक्त, ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पट्टवरण (संबंध) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन परिवाद फाइल करने के लिए सहभाग होगा।

(6) मानीटरी समिति मुद्रा दर मुद्रा के आधार पर अंशों पर निर्विरोध रहते हुए संबंध विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, आयोगिक संगठनों या संबंध पण्डितों के प्रतिनिधियों की अपने विचार-विमर्श में महत्व के लिए आमंत्रित कर सकेगी।

(7) मानीटरी समिति प्रत्येक वर्ष की 31 मार्च तक की अपनी वार्षिक कार्यबाँध रिपोर्ट राज्य के मुख्य जीव बाँध उपाध्य IV में उपबंधित रूप विधान के अनुसार उक्त वर्ष के 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।

(8) केंद्रीय सरकार का पट्टवरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय मानीटरी समिति को अपने कृत्यों के प्रभावी निर्वाहन के लिए समय-समय पर ऐसे निर्देश दे सकेगा, जो वह तीक्ष समझें।

(9) इस अधिसूचना के उपबंधों का प्रभाव देने के लिए केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार अतिरिक्त उपाध्य, यदि कोई हो, विनिर्दिष्ट कर सकेंगे।
(10) इस अधिसूचना के उपवंश भारत के माननीय उद्घटन न्यायालय या माननीय उद्घटन न्यायालय या माननीय राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण द्वारा पारित कोई आदेश या पारित होने वाले किसी आदेश, यदि कोई है, के अधीन, होंगे।

[फा. मं. 25/9/2015-ईएसजेड/आरई]

डॉ. टी. चांदनी, वैज्ञानिक 'जी'

उपांबंध इ

सुखना वन्यजीव अभयारण्य, चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र के पारिस्थितिक संबंधी जोन का मानचित्र

उपांबंध इi

सुखना वन्यजीव अभयारण्य के निर्देशांक और पारिस्थितिक संबंधी जोन की सीमा का वर्णन

<p>| विन्दु क से ख | सुखना वन्यजीव अभयारण्य के सीमा के उत्तर की ओर खुदा आदिशेखर गांव से पीड़ीसी की ओर उत्तर मार्ग तक साथ में संघ राज्य क्षेत्र तक जाती है। |
| विन्दु ख से ग | पीड़ीसी उत्तर मार्ग के साथ होते हुए किषनगढ़ गांव की पक्की सड़क तक जाती है। |
| विन्दु ग से घ | किषनगढ गांव होते हुए किषनगढ गांव की पक्की सड़क तक जाती है। ए-आई टी पाक के गोल बच्चे तक पहुँचती है। |
| विन्दु घ से ङ | किषनगढ से- ए-आई टी पाक के गोल बच्चे से होते हुए संघ राज्य क्षेत्र की सीमा के साथ डी टी माल रोड तक पहुँचती है। |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th>बिन्दु</th>
<th>संघ राज्य क्षेत्र की सीमा के साथ में नियामक अंत होता है।</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>संघ राज्य क्षेत्र की सीमा का नियामक अंत जहाँ होता है वही पास में संगम स्थल है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>संघ राज्य क्षेत्र की सीमा के संगम स्थल बिन्दु के पास ही महादेवपुर गांव है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>महादेव गांव में संघ राज्य क्षेत्र की सीमा के पास कंसा देवी मंदिर के स्तंभ सुखाना बन्यजीव अभयारण्य है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>कंसा देवी मंदिर के पास सील आरक्षित वन की ओर कंबाला रोड पर संघ राज्य क्षेत्र की सीमा है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>कंबाला रोड पर आरक्षित वन का संघ राज्य क्षेत्र की ओर गांव कंसल के संघ राज्य क्षेत्र की सीमा है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>संघ राज्य सीमा के साथ गांव कंसल से सुखाना बन्यजीव अभयारण्य पूर्वी गांव की ओर गांव बुदालिशर तक जाती है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बिन्दु</td>
<td>संघ राज्य सीमा के साथ गांव कंसल से सुखाना बन्यजीव अभयारण्य पूर्वी गांव की ओर गांव बुदालिशर तक जाती है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उपाभ्यंक

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं</th>
<th>जी.पी.एस निर्देशांक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>ॐ 30° 45'16.1&quot; पू.76° 50'15.7&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>ॐ 30° 45'50.3&quot; पू.76° 49'36.6&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>ॐ 30° 46'00.6&quot; पू.76° 49'25.3&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>ॐ 30° 46'06.5&quot; पू.76° 49'10.2&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>ॐ 30° 46'29.0&quot; पू.76° 48'48.6&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>ॐ 30° 46'50.4&quot; पू.76° 49'16.5&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>ॐ 30° 47'5.17&quot; पू.76° 49'38.35&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>ॐ 30° 47'54.4&quot; पू.76° 50'09.4&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>ॐ 30° 48'12.5&quot; पू.76° 50'31.0&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>ॐ 30° 48'11.9&quot; पू.76° 51'11.6&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>ॐ 30° 48'33.1&quot; पू.76° 52'10.9&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>ॐ 30° 48'19.8&quot; पू.76° 51'59.3&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>ॐ 30° 47'29.8&quot; पू.76° 51'04.6&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>ॐ 30° 47'12.3&quot; पू.76° 51'23.9&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>ॐ 30° 47'56.8&quot; पू.76° 51'93.3&quot;</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>ॐ 30° 47'70.5&quot; पू.76° 52'41.3&quot;</td>
</tr>
</tbody>
</table>
उपाध्य-III

सूचना व्यवस्थित अभ्यारण के पारिस्थितिक संबंधों की बाह्य सीमा के महत्वपूर्ण बिंदु दर्शाते वाले निर्देशांक

<table>
<thead>
<tr>
<th>बिन्दु</th>
<th>देशांतर</th>
<th>अशांश</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>ए</td>
<td>76° 48' 37.70&quot; पू</td>
<td>30° 46' 45.07&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>बी</td>
<td>76° 47' 28.57&quot; पू</td>
<td>30° 46' 01.22&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>सी</td>
<td>76° 49' 29.60&quot; पू</td>
<td>30° 44' 01.72&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>ही</td>
<td>76° 49' 48.85&quot; पू</td>
<td>30° 43' 51.68&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>ई</td>
<td>76° 50' 53.55&quot; पू</td>
<td>30° 43' 50.57&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>एफ</td>
<td>76° 49' 55.58&quot; पू</td>
<td>30° 44' 22.92&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>जी</td>
<td>76° 50' 13.19&quot; पू</td>
<td>30° 44' 57.21&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>एच</td>
<td>76° 50' 16.42&quot; पू</td>
<td>30° 45' 09.45&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>आई</td>
<td>76° 49' 37.84&quot; पू</td>
<td>30° 45' 48.31&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>जे</td>
<td>76° 48' 53.36&quot; पू</td>
<td>30° 45' 11.83&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>के</td>
<td>76° 48' 18.31&quot; पू</td>
<td>30° 45' 53.09&quot; उ</td>
</tr>
<tr>
<td>एल</td>
<td>76° 49' 01.59&quot; पू</td>
<td>30° 46' 13.83&quot; उ</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उपाध्य-IV

पारिस्थितिक संबंधी जोन मानिटी समिति-की गई कार्यवाही की रिपोर्ट का रूप विधान

1. बैठकों की संख्या और तिथि।
2. बैठकों का कार्यवृत्त: कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का समीक्षण करें। बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक अनुवंश में उपाध्य करें।
3. आंचलिक महायोजना की तैयारी की प्रस्तुति जिसके अंतर्गत पर्यटन महायोजना भी है।
4. भू-अभिलेख में सदृश तुषियों के संघर्ष के लिए व्यवहार किए गए मामलों का सारांश।
5. पर्यावरण प्रभाव निर्धारण अधिनियम, 2006 के अंतर्गत आनेवाली गतिविधियों की संबंधित के मामलों का सारांश। व्यापर एक पृथक उपाध्य के रूप में उपाध्य किए जा सकते हैं।
6. पर्यावरण प्रभाव निगराण अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों की संविधा के मामलों का सारांश। व्यूर एक पुष्ट उपायक रूप में उपयोग किए जा सकते हैं।

7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन रज्ज की गई शिकायतों का सारांश।

8. कोई अन्य महत्वपूर्ण विषय।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE
NOTIFICATION

New Delhi, the 18th January, 2017

S.O. 185(E).—whereas, a draft notification was published in the Gazette of India, Extraordinary, vide notification of the Government of the India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change number S.O. 2541 (E), dated the 2nd September, 2015, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby within the period of sixty days from date on which copies of the Gazette containing the said notification were made available to the public;

And whereas, objections and suggestions were received from all persons and stakeholders in response to the draft notification have been duly considered by the Central Government;

And whereas, the Sukhna Wildlife Sanctuary in the Union territory of Chandigarh shares the boundary with two other States viz Punjab and Haryana and Sukhna Wildlife Sanctuary falls in the Shivalik Hills which are ecologically sensitive and geologically unstable and thus are highly prone to soil erosion during rains and the total area of Sukhna Wildlife Sanctuary is 25.9849 square kilometres (6420.99 acres).

And whereas, due to its ecological, faunal, floral, geo-morphological, natural and geological significance for the purpose of protecting, propagating and developing wildlife and its environment, this area was declared as Wildlife Sanctuary vide Chandigarh Administration notification No. 694-III(4)-98/4519, dated the 6th March, 1998.

And whereas, as per Wildlife Census, carried out under the guidance of Wildlife Institute of India, during 2010, two species of Schedules I and II and three species of Schedule III and many species of Schedule IV of Wildlife (Protection) Act, 1972 (53 of 1972), were reported in Sukhna Wildlife Sanctuary; among prominent species present in the Sukhna Wildlife Sanctuary are—Leopar (Panthera sp.), Sambar (Rusa sp.), Indian Pangolin (Manis sp.), Golden Jackal (Canis), Grey Langur (Semnopithecus sp.), Wild Boar (Sus sp.), Red Jungle Fowl (Gallus sp.), Indian Peafowl (Pavo sp.), Chital (Axis sp.), Golden Oriole (Oriolus sp.), Cobra (Ophiophagus sp.), Russell’s Viper (Daboia sp.), Indian Python (Python sp.), etc. apart from this a wide variety of butterflies (more than 70 species) and other insects are found in abundance.

And whereas, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of which are specified in paragraph 1 of this notification, around the protected area of the Sukhna Wildlife Sanctuary as Eco-sensitive Zone from ecological and environmental point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1), clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area of 1050 hectares, to an extent varying from 2.0 kilometres to 2.75 kilometres from the boundary of the Sukhna Wildlife Sanctuary in the Union territory of Chandigarh as the Sukhna Wildlife Sanctuary Eco-sensitive Zone (hereinafter referred to as the Eco-sensitive Zone), details of which are as under, namely:-

1. **Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.**— (1) The extent of Eco-sensitive Zone varies from 2.0 kilometres to 2.75 kilometres from the boundary of the Sukhna Wildlife Sanctuary in the Union territory of Chandigarh; the Union territory Administration of Chandigarh has divided the Eco-sensitive Zone in two zones i. e., Zone-I and Zone-II and The extent of Zone-I is upto 0.5 km of from the boundary of the Sukhna Wildlife Sanctuary and the balance area shall be in Zone-II and this has been done with the purpose of having stricter norms in Zone-I for protection of wildlife habitat; the area of Eco-sensitive Zone is 1050.0 hectares (on the side of Union territory of Chandigarh).

(2) The map of Eco-sensitive Zone boundary together with its latitudes and longitudes is appended as *Annexure I*.

(3) The boundary description of the Eco-sensitive Zone and co-ordinates of Sukhna Wildlife Sanctuary are appended as *Annexure II and Annexure IIA*.

(4) The coordinates of Eco-sensitive Zone with its latitudes and longitudes is appended as *Annexure III*.

(5) There are three villages falling within the Eco-sensitive Zone namely, Khuda Alisher, Kishangarh and Kaimbwala.
2. **Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.**— (1) The Union territory of Chandigarh shall, for the purpose of the Eco-sensitive Zone prepare, a Zonal Master Plan, within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification.

(2) The Zonal Master Plan shall be approved by the Competent Authority in the Union territory Government.

(3) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the Union territory Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the Central and Union territory laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.

(4) The said Plan shall be prepared in consultation with all Union territory Government Departments, namely:-

(i) Environment;

(ii) Forest;

(iii) Urban Development;

(iv) Tourism;

(v) Municipal;

(vi) Revenue;

(vii) Agriculture;

(viii) Chandigarh Pollution Control Committee;

(ix) Irrigation; and

(x) Public Works Department,

for integrating environmental and ecological considerations into it.

(5) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.

(6) The Zonal Master Plan shall provide the details for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.

(7) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, village and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies.

(8) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone so as to ensure Eco-friendly development and livelihood security of local communities.

3. **Measures to be taken by Union territory Government.**— The Union territory Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-

(1) **Landuse.**— Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or industrial related development activities:

Provided that the conversion of agricultural lands within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the Union territory Government, to meet the residential needs of local residents, and for the activities listed against serial numbers 21, 23, 29 and 34 in column (2) of the Table in paragraph 4, namely:-

(i) eco-friendly cottages for temporary occupation of tourists such as tents, wooden houses, for eco-friendly tourism activities;

(ii) small scale industries not causing pollution;

(iii) rainwater harvesting; and

(iv) cottage industries including village artisans:
Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the Union territory Government and without compliance of the provisions of article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the Union territory Government, after obtaining the views of the Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the above correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph:

Provided also that there shall be no consequential reduction in green area, such as forest area and agricultural area etc. and efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas.

(2) **Natural springs.**— The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the Union territory Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

(3) **Tourism.**— (a) The activity relating to tourism within the Eco-sensitive Zone shall be as per Tourism Master Plan, which shall be part of the Zonal Master Plan.

(b) The Tourism Master Plan shall be prepared by the Department of Tourism, Union territory Government of Chandigarh in consultation with Department of Revenue and Forests, Government of Union territory of Chandigarh.

(c) The activity of tourism shall be regulated as under, namely,—

(i) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be based on carrying capacity study of the Eco-sensitive Zone and in accordance with the eco-tourism guidelines issued by the National Tiger Conservation Authority, Ministry of Environment, Forest and Climate Change (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

(ii) new construction of hotels and resorts shall not be permitted within Eco-sensitive Zone;

(iii) till the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee.

(4) **Natural heritage.**— All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and preserved and plan shall be drawn up for their protection and conservation, within six months from the date of publication of this notification and such plan shall form part of the Zonal Master Plan.

(5) **Man-made heritage sites.**— Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and plans for their conservation shall be prepared within six months from the date of publication of this notification and incorporated in the Zonal Master Plan.

(6) **Noise pollution.**— Chandigarh Pollution Control Committee shall implement the regulations for control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone in accordance with the provisions stipulated of the Noise Pollution (Regulation And Control) Rules, 2000 under the Environment (Protection) Act, 1986

(7) **Air pollution.**— Chandigarh Pollution Control Committee shall implement standards and regulations for the control of air pollution in the Eco-sensitive Zone in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rule made thereunder.

(8) **Discharge of effluents.**— The discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environmental (Protection) Act, 1986 and rules made thereunder.

(9) **Solid wastes.**— Disposal of solid wastes shall be as under:-

(i) the solid waste disposal in Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Solid Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change vide notification number S.O. 1357(E), dated the 8th April, 2016 as amended from time to time;

(ii) the local authorities shall draw up plans for the segregation of solid wastes into biodegradable and non-biodegradable components;
(iii) the biodegradable material shall be recycled preferably through composting or vermiculture;
(iv) the inorganic material may be disposed in an environmentally acceptable manner at site(s) identified outside the Eco-sensitive Zone and no burning or incineration of solid wastes shall be permitted in the Eco-sensitive Zone.

(10) **Bio-medical waste.**— The bio-medical waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R 343(E), dated the 28th March, 2016, as amended from time to time.

(11) **Vehicular traffic.** - The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master Plan is prepared and approved by the competent authority in the Union territory Government, Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.

4. **List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.**— All activities in the Eco-sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) and the rules made thereunder and shall be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

<table>
<thead>
<tr>
<th>Sl.No.</th>
<th>Activity</th>
<th>Remarks</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>A. Prohibited Activities:</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>Commercial mining, stone quarrying and crushing units.</td>
<td>(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units are prohibited except for the domestic needs of bona fide local residents. (b) The mining operations shall strictly be in accordance to the orders of the Hon’ble Supreme Court dated the 4th August, 2006 in the matter of T. N. Godavarman Thirumulpad Vs. Union of India in Writ Petition (Civil) No. 202 of 1995 and dated the 21st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. Union of India in Writ Petition (Civil) No. 435 of 2012.</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>Setting up of saw mills.</td>
<td>No new or expansion of existing saw mills shall be permitted within the Eco-sensitive Zone.</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>Setting up of industries causing water or air or soil or noise pollution.</td>
<td>No new or expansion of existing polluting industries shall be permitted within the Eco-sensitive Zone.</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>Use or production of any hazardous substances.</td>
<td>Prohibited (except as otherwise provided) as per law.</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>Commercial use of firewood.</td>
<td>Prohibited (except as otherwise provided) as per law.</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>Discharge of untreated effluents and solid waste in natural water bodies or land area.</td>
<td>Prohibited (except as otherwise provided) as per law.</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>Commercial water resources including ground water harvesting.</td>
<td>Commercial use of natural water resources including ground water shall be prohibited in the Eco-sensitive Zone and all steps shall be taken to prevent contamination or pollution of water.</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>Establishment of new thermal and major hydroelectric projects.</td>
<td>Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws.</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>New wood based industry.</td>
<td>No establishment of new wood based industry shall be permitted within the limits of Eco-sensitive Zone: Provided the existing wood-based industry may continue as per law: Provided further that renewal of licenses of existing saw mills shall not be done on their expiry.</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate and companies.</td>
<td>Prohibited (except as otherwise provided) as per applicable laws, however, initiatives on a small-scale by the local farmers are permitted.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

B. RegulatedActivities:
11. **Commercial establishment of hotels and resorts.**

No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometre of the boundary of the protected area or up to the boundary of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer except for accommodation for temporary occupation of tourists related to eco-friendly tourism activities:

Provided that, beyond one kilometre or up to the extent of the Eco-sensitive Zone, all new tourism activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Eco-Tourism Master Plan.

Commercial eco-tourism establishments shall be regulated strictly in accordance with the guidelines for taking non-forestry activities in Wildlife habitats issued vide F.No.610/2011 WL, dated 15-03.2011 by the Ministry of Environment and Forest (WL Division), New Delhi and National Tiger Conservation Authority Guidelines (if applicable).

12. **Construction activities.**

No new commercial construction of any kind shall be permitted within 0.5 kilometre (Zone-I) from the boundary of protected area or up to the boundary of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:

Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their residential use including the activities listed in sub-paragraph (1) of paragraph 3.

(a) Construction of all types of new buildings and houses up to a distance of 0.5 km i.e. in the zone-I shall be prohibited; from 0.5 kilometre to 1.25 kilometre from the boundary of Sukhna Wildlife Sanctuary, construction of low density (ground coverage less than half of the plot size) and low rise building (height up to 15 feet) can be allowed if permissible under the prescribed land use plan of the area; any construction will have to adhere to the Development Regulation applicable to the area and shall be regulated as per the Eco-sensitive Zone management plan; beyond 1.25 kilometre construction of new buildings and houses shall be regulated as per existing Chandigarh Administration Bylaws and Architectural Control/Zoning regulation of Union territory Administration. Construction of basement in Zone-I of Eco-sensitive Zone shall not be allowed, however, reconstruction/repair of building in Zone-I shall be allowed subject to the restriction as above i.e. construction of low density (ground coverage less than half of the plot size) and low rise building (height up to 15 feet).

(b) The construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per the applicable rules and regulations, if any.

(c) The further, construction and augmentation of civic amenities shall be regulated as per the Zonal Master Plan.

13. **Erection of electrical and telecommunication towers.**

Shall be regulated by Union territory of Chandigarh Administration; underground cabling shall be promoted.

14. **Felling of trees.**

- (a) There shall be no felling of trees on the forest land or Government or revenue or private lands without prior permission of the competent authority in the Union territory Government.

- (b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the Central or the Union territory laws and the rules made thereunder.
<p>| | | |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>15.</td>
<td>Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.</td>
<td>Construction of new roads and widening or repair of existing roads in the Eco-sensitive Zone shall be regulated and done with minimal impacts.</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>Erection of high tension transmission lines.</td>
<td>As per regulations, as applicable; underground cabling shall be promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>Introduction of exotic species.</td>
<td>Introduction of exotic species shall be regulated in the Eco-sensitive Zone.</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>Fencing of premises of hotels and lodges.</td>
<td>Fencing of premises of hotels and lodges shall be regulated in the Eco-sensitive Zone.</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>Air (including noise) and vehicular pollution.</td>
<td>As Regulated under applicable laws.</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>Commercial sign boards and hoardings.</td>
<td>As Regulated under applicable laws.</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>Eco-friendly cottages for temporary occupation of tourists such as tents, wooden houses, etc. for eco-friendly tourism activities.</td>
<td>As Regulated under applicable laws.</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>Discharge of treated effluents in natural water bodies or land area.</td>
<td>Recycling of treated effluent shall be encouraged and for disposal of sludge or solid wastes, the existing regulations shall be followed.</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>Small scale industries not causing pollution.</td>
<td>Non-polluting, non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous goods from the Eco-sensitive Zone which do not cause any adverse impact on environment shall be permitted.</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>Undertaking activities related to tourism like over-flying the national park area by aircraft, hot-air balloons.</td>
<td>Regulated under applicable laws (with prior approval of Chief Wildlife Warden of the Union territory of Chandigarh).</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>Solid Waste Management</td>
<td>Regulated under applicable laws.</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>Uses of plastic carry bags.</td>
<td>Regulated (except as otherwise provided) as per law.</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>Eco-Tourism Activity</td>
<td>Regulated under applicable laws.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### C. Promoted Activities:

<p>| | | |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>28.</td>
<td>Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming and fisheries.</td>
<td>Permitted under the law.</td>
</tr>
<tr>
<td>29.</td>
<td>Rain water harvesting.</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>Use of renewable energy sources.</td>
<td>Permitted under the law.</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>Adoption of green technology for all activities.</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>32.</td>
<td>Organic farming.</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>33.</td>
<td>Vegetative fencing.</td>
<td>Permitted under the law.</td>
</tr>
<tr>
<td>34.</td>
<td>Cottage industries including village artisans, etc.</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>35.</td>
<td>Agro forestry.</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>36.</td>
<td>Environmental awareness</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
<tr>
<td>37.</td>
<td>Skill development</td>
<td>Shall be actively promoted.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

5. **Monitoring Committee.**—The Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, for effective monitoring of the Eco-sensitive Zone, which shall comprise of the following, namely:-
(i) Chief Conservator of Forest cum Chief Wildlife Warden, Government of Union territory (UT) Chandigarh –Chairman;

(ii) Chief Architect, UT, Chandigarh –Member;

(iii) Chief Engineer, UT, Chandigarh –Member;

(iv) Chief Engineer, Municipal Corporation UT, Chandigarh –Member;

(v) Director Rural Development and Panchayat, UT, Chandigarh –Member;

(vi) Member Secretary, Chandigarh Pollution Control Committee –Member;

(vii) A representative of Non-governmental Organisations’ working in the field of environment to be nominated by the Government of Union territory of Chandigarh for a term of three years –Member;

(viii) One expert in the area of ecology and environment to be nominated by the Government of UT, Chandigarh –Member;

(ix) Member of State Biodiversity Board –Member;

(x) Deputy Conservator of Forest (WL), UT Chandigarh –Member–Secretary.

6. Terms of reference.—

(1) The tenure of the Monitoring Committee shall be three years.

(2) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

(3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533(E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.

(4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533(E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned Regulatory Authorities.

(5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Conservator Forest (WL) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) against any person who contravenes the provisions of this notification.

(6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.

(7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on 31st March of every year by 30th June of that year to the Chief Wild Life Warden of the Union territory per proforma appended at Annexure IV.

(8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

(9) The Central Government and the Union territory Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

(10) The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any, passed, or to be passed, by the Hon’ble Supreme Court of India or the High Court or National Green Tribunal.

[F. No. 25/9/2015-ESZ-RE]

Dr. T. CHANDINI, Scientist ‘G’
Annexure I

Map of Eco-sensitive Zone around Sukhna Wildlife Sanctuary, UT of Chandigarh
Annexure II

Boundary description of the Eco-sensitive Zone and co-ordinates of Sukhna Wildlife Sanctuary

<table>
<thead>
<tr>
<th>Point</th>
<th>Description</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>A to B</td>
<td>On boundary of Sukhna Wildlife Sanctuary from northern side of village Khuda Alisher towards PEC upto Uttar Marg along Union territory boundary.</td>
</tr>
<tr>
<td>B to C</td>
<td>From PEC along Uttar Marg to village Kishangarh causeway.</td>
</tr>
<tr>
<td>C to D</td>
<td>From village Kishangarh causeway to Kishangarh – I.T. Park road round about.</td>
</tr>
<tr>
<td>D to E</td>
<td>From Kishangarh – I.T. Park road Round about upto Union territory boundary along DT Mall road.</td>
</tr>
<tr>
<td>E to F</td>
<td>Along Union territory boundary to Regulator End.</td>
</tr>
<tr>
<td>F to G</td>
<td>From regulator end along Union territory boundary upto near confluence point.</td>
</tr>
<tr>
<td>G to H</td>
<td>Near confluence point along boundary near village Mahadevpur.</td>
</tr>
<tr>
<td>H to I</td>
<td>Along boundary near village Mahadevpur to near Kansa Devi temple on Sukhna Wildlife Sanctuary boundary.</td>
</tr>
<tr>
<td>I to J</td>
<td>Near Kansa Devi temple towards Lake reserve forest on boundary on Kaimbwala road.</td>
</tr>
<tr>
<td>J to K</td>
<td>From reserve forest on Kaimbwala road towards village Kansal along Union territory boundary.</td>
</tr>
<tr>
<td>K to L</td>
<td>Along boundary near village Kansal to Sukhna Wildlife Sanctuary on eastern side of village Khuda Alisher.</td>
</tr>
<tr>
<td>L to A</td>
<td>Along boundary near village Kansal to Sukhna Wildlife Sanctuary on eastern side of village Khuda Alisher.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

Annexure-IIA

G.P.S. Co-ordinates of Boundary of Sukhna Wildlife Sanctuary

<table>
<thead>
<tr>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
<th></th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>N 30° 45′16.1″</td>
<td>9.</td>
<td>N 30° 48′12.5″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 50′15.7″</td>
<td></td>
<td>E076° 50′31.0″</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>N 30° 45′50.3″</td>
<td>10.</td>
<td>N 30° 48′11.9″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 49′36.6″</td>
<td></td>
<td>E076° 51′11.6″</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>N 30° 46′00.6″</td>
<td>11.</td>
<td>N 30° 48′33.1″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 49′25.3″</td>
<td></td>
<td>E076° 52′10.9″</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>N 30° 46′06.5″</td>
<td>12.</td>
<td>N 30° 48′19.8″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 49′10.2″</td>
<td></td>
<td>E076° 51′59.3″</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>N 30° 46′29.0″</td>
<td>13.</td>
<td>N 30° 47′29.8″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 48′48.6″</td>
<td></td>
<td>E076° 51′04.6″</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>N 30° 46′50.4″</td>
<td>14.</td>
<td>N 30° 47′12.3″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 49′16.5″</td>
<td></td>
<td>E076° 51′23.9″</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>N 30° 47′5.17″</td>
<td>15.</td>
<td>N 30° 47′56.8″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 49′38.35″</td>
<td></td>
<td>E076° 51′93.3″</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>N 30° 47′54.4″</td>
<td>16.</td>
<td>N 30° 47′70.5″</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>E076° 50′09.4″</td>
<td></td>
<td>E076° 52′41.3″</td>
</tr>
</tbody>
</table>
Annexure III

The coordinates showing prominent points of the outer boundary of Eco-sensitive Zone of Sukhna Wildlife Sanctuary, Union territory Chandigarh.

<table>
<thead>
<tr>
<th>Points</th>
<th>Longitude</th>
<th>Latitude</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>A</td>
<td>76° 48' 37.70&quot; E</td>
<td>30° 46' 45.07&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>B</td>
<td>76° 47' 28.57&quot; E</td>
<td>30° 46' 01.22&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>C</td>
<td>76° 49' 29.60&quot; E</td>
<td>30° 44' 01.72&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>D</td>
<td>76° 49' 48.85&quot; E</td>
<td>30° 43' 51.68&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>E</td>
<td>76° 50' 53.55&quot; E</td>
<td>30° 43' 50.57&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>F</td>
<td>76° 49' 55.58&quot; E</td>
<td>30° 44' 22.92&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>G</td>
<td>76° 50' 13.19&quot; E</td>
<td>30° 44' 57.21&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>H</td>
<td>76° 50' 16.42&quot; E</td>
<td>30° 45' 09.45&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>I</td>
<td>76° 49' 37.84&quot; E</td>
<td>30° 45' 48.31&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>J</td>
<td>76° 48' 53.36&quot; E</td>
<td>30° 45' 11.83&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>K</td>
<td>76° 48' 18.31&quot; E</td>
<td>30° 45' 53.09&quot; N</td>
</tr>
<tr>
<td>L</td>
<td>76° 49' 01.59&quot; E</td>
<td>30° 46' 13.83&quot; N</td>
</tr>
</tbody>
</table>

Annexure IV

Proforma of Action Taken Report: Eco-sensitive Zone monitoring Committee.—

1. Number and date of meetings;
2. Minutes of the meetings: mention main noteworthy points. Attached minutes of the meeting on separate Annexure.
4. Summary of cases dealt for rectification of error apparent on face of land record.
Details may be attached as Annexure.

5. Summary of cases scrutinised for activities covered under Environment Impact Assessment Notification, 2006. Details may be attached as separate Annexure.

6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under Environment Impact Assessment Notification, 2006. Details may be attached as separate Annexure.


8. Any other matter of importance.